खुल रहे हैं ग्रहों के रिंगों के रहस्य

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडें में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक चांद का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है। चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा।

ग्रहीय वलयों (रिंगों) के बारे में पिछली चार शताब्दियों में करीब कई हजार लेख व सैकड़ों किताबें लिखी गई तथा लाखों फोटोग्राफ लिए गये। लेकिन वैज्ञानिक व खगोलशास्त्री अभी तक उनके बारे में कोई निश्चित राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल के चार ग्रह वृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपच्यून ग्रहीय वलय की श्रेणी में आते हैं। यह चारों ग्रह एक वलय (रिंग) से घिरे हुए हैं। अब इन वलय के रहस्यों को प्राप्त जानकारियों के आधार पर वैज्ञानिक सुलझाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

हाल में ही शनि ग्रह के चारों ओर बने वलय की उत्पत्ति के रहस्य से पर्दा हट गया है। अभी तक इस ग्रह को चारों ओर से घेरने वाले वलय की उत्पत्ति के बारे में पता नहीं था। वैज्ञानिकों का दावा है कि चार अरब वर्ष पहले बड़े उपग्रह के अंतरिक्ष में ही नष्ट होने की घटना के कारण शनि के चारों ओर वलय और आंतरिक चंद्रमा का निर्माण हुआ। कोलोराडों में साउथवेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट के शोधकर्ताओं के अनुसार 4.5 अरब वर्ष पहले टाइटन के आकार के उपग्रह से शनि ग्रह के टकराने के बाद इस शानदार वलय का निर्माण हुआ। इसके साथ ही शनि ग्रह के आंतरिक चांद का भी निर्माण हुआ । शनि के इस भव्य वलय में इस समय 90 से 95 प्रतिशत तक पानी और बर्फ है। चट्टानी धूमकेतु का मलबा और धूल के इस वलय पर पड़ने से इसका रंग कुछ फीका पड़ गया है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि जब इस खूबसूरत वलय का निर्माण हुआ होगा तो यह शुद्ध बर्फ से बना होगा। सौरमंडल के बाहर का पदार्थ आधा बर्फ और आधा चट्टानों का मिश्रण है। इस लिहाज से शनि के वलय की संरचना बेमिसाल है। इसी तरह शनि के आंतरिक चांद का कम घनत्व भी सघन बर्फ को दर्शाता है। यह अध्ययन नेचर जर्नल के ताजा अंक में प्रकाशित हुआ है। पहले के अध्ययन में पाया गया था कि शनि के वलय का निर्माण धूमकेतु द्वारा छोटे-छोटे उपग्रह को अस्त-व्यस्त करने से हुआ।

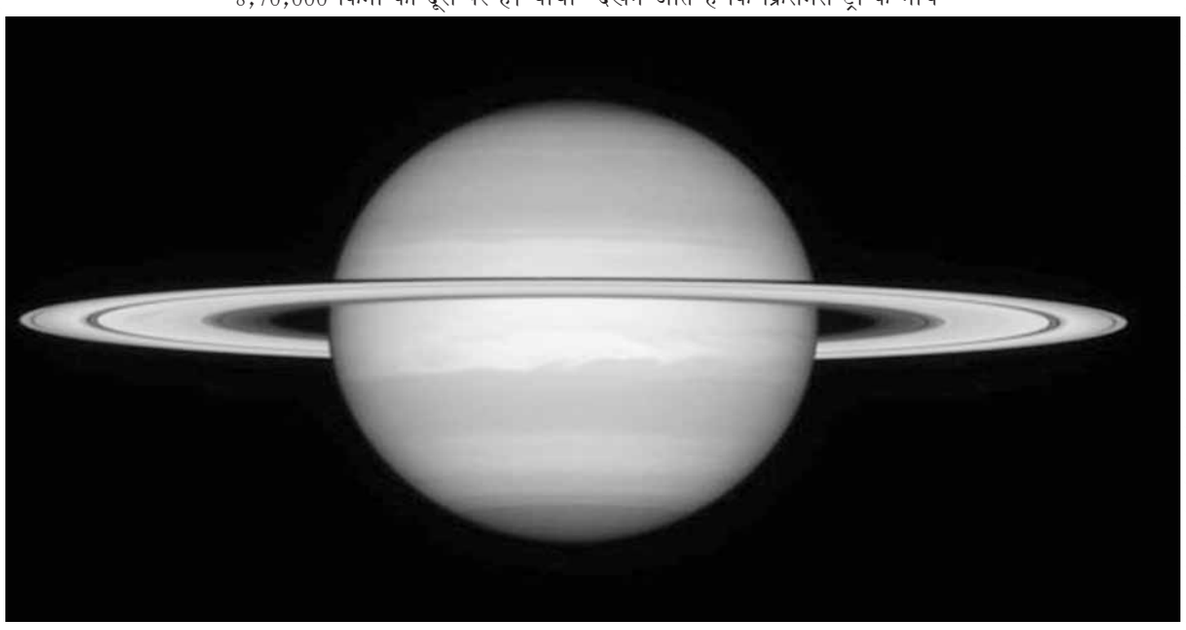

शनि के वलय के बारे में सर्वप्रथम खगोलशास्त्री गैलीलियों ने सन् 1610 में बताया। सन् 1663 में डच वैज्ञानिक सी. हाइगैंस ने एवं 1685 में फ्रेंच खगोलशास्त्री डी. कासिनी ने शनि के दूसरे एवं तीसरे वलय का पता लगाया। चौथे वलय की खोज सन् 1969 में पियरे गुवेरिन ने की। पायनियर-11 ने शनि के तीन और वलय की खबर दी। यह अंतरिक्ष यान 5 अप्रैल 1972 को कैनेडी अंतरिक्ष अड्डे से छोड़ा गया था। शनि के वलय धूल एवं बर्फ के छोटे-छोटे कणों के मिलकर बने हैं। इन कणों का औसत व्यास 2.5 मिलीमीटर है। वैज्ञानिकों के लिए आज भी यह काफी रहस्य का विषय है कि यह वलय अस्त व्यस्त क्यों नहीं होते हैं।

शनि का पहला वलय, उसकी सतह से 12000 से 13800 किमी की दूरी पर है। दूसरा वलय 87000 से 116000 किमी की दूरी पर एवं तीसरा वलय 7,00,000 से 8,70,000 किमी की दूरी पर है। चौथा वलय केन्द्र के सबसे निकट है। पांचवा वलय 3,50,000 किमी की दूरी पर छठवां वलय 3,53,500 किमी एवं सातवां वलय केन्द्र से 5,40,000 किमी से 8,40,00 किमी के बीच है। यह सभी वलय शनि के चारों तरफ घूमते हैं। इस बारे में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के डॉ. एथेनी डेलजियो के विचार है कि इस दूरी से हम शनि का सामान्य झुका हुआ पट्टियों युक्त चेहरा ही देख सकते हैं, लेकिन हम इतना अवश्य जानते हैं कि जैसे ही हम इसके और नजदीक जाएंगे, ये पट्टीयां हमारी आंखों के सामने से खुलती जाएगी और इनमें छोटी-छोटी घटनाएं और रचनाएं जैसे चिह्न, तूफान, आंधी दिखाई देने लगेंगी और शनि हमारे सामने कई गुना विशाल स्वरूप में खड़ा होगा। यह कल्पना इतनी रोमांचक है कि इसके लिए अब और ज्यादा इंतजार नहीं किया जा सकता है। भले ही हमें यह पता है कि इसे देखने के लिए अभी दो-तीन महीने इंतजार करना होगा। कैसिनी की इमेजिंग साइंस टीम के प्रमुख डॉ. कैरोलीन पोर्को की राय में यह एक रोचक अनुभव होगा। वे लोग जो दशकों से इस अभियान की तैयारी में लगे हुए हैं, उन्हें कैसिनी कैमरों के सामने धीरे-धीरे शनि का विशाल आकार लेना ठीक वैसा ही है जैसा अनुभव बच्चे क्रिसमस की सुबह घर की सीढ़ियां उतरकर नीचे यह देखने आते हैं कि क्रिसमस ट्री के नीचे कौन-सा उपहार उनकी प्रतिक्षा कर रहा है। जो लोग 23 वर्ष पहले शनि की यात्रा से जुड़े हुए हैं, उनके लिए यह एक भावनापूर्ण यात्रा होगी।

कुछ लोगों को वह भुलाए नहीं भुलता जब उन्होंने पहली बार वायजर से शनि की वलयों को देखा था। 'बी' रिंग की छड़े और गूंथी हुई 'एफ' रिंग और उसके इर्द-गिर्द मंडराते चंद्रमा का नजारा आंखों के लिए अविस्मरणीय था। आम लोगों के लिए शनि का यह नजारा भले ही दर्शनीय हो, लेकिन अंतरिक्ष वैज्ञानिकों की आत्मा ही जानती है कि इसके लिए उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ा है। कैसिनी अभियान के आरंभ होने पर नासा के सौलर सिस्टम एम्लोरेशन डिवीजन के निर्देशक वैस्ले हंटर्स कहते हैं- 'वाह ! कितनी दूरी हमने तय की है। यह दिन देखने के लिए हमने कितने प्रयास किए हैं और हमारे लिए यह कितना कीमती है। 'एक जुलाई 2004 को जब कैसिनी शनि की कक्षा में प्रवेश करेगा, इसका चार वर्षीय अभियान आरंभ हो जाएगा। इसमें अमेरिका तथा यूरोप ने 14 कैमरा टीमों के वैज्ञानिक शनि की कई विशेषताओं, इसके चंद्रमाओं तथा वलयों की सूक्ष्म जांच में संलग्न हो आएंगे।

इसके पूर्व 24 जनवरी 1986 को वायजर-2 यूरेनस के वलयों के सबसे निकटतम दूरी (1,07,000) से गुजरा था। पृथ्वी से 64 गुना बड़े इस ग्रह का वजन केवल 15 पृथ्वी के बराबर की जा सकती है। इसका घनत्व भी पृथ्वी से कम है। यूरेनस के सभी नौ वलय 1,00,000 किमी से कम चौड़े हैं। लेकिन इनकी तुलना 2,50,000 किमी परिधि के बराबर की जा सकती है, इनमें तो आठ तो 100 किमी के आस-पास चौड़े हैं। यह सभी वलय वृत्ताकार अंतरिक्षीय वलय है। इनमें 6 परिवर्तन चौड़ाई के दीर्घवृत्ताकार वलय है। धूल और बर्फ के यह वलय आकार में बदतर होते हैं। लेकिन यह अस्त-व्यस्त नहीं होते हैं। इन वलयों की सबसे बड़ी विशेषता यही है। इन वलयों का सर्वप्रथम चित्र 1984 में लिया गया। यूरेनस की सतह से 800 किमी दूर विविध चौड़ाई के अधिकांश बाहरी वलयों का चित्र स्पष्ट रूप से लिया गया था। 18 उपग्रहों वाला यह ग्रह अतिशय ठंडा होने के कारण इसका तापमान लगभग शून्य के नीचे है। सूर्य पश्चिम में उदित होकर पूर्व में अस्त होने वाले इस ग्रह के वलयों के बारे में खगोल शास्त्री अभी कोई राय नहीं बना सके हैं। हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रही जूपिटर, पांचवे स्थान पर स्थित है। पृथ्वी की ही तरह जूपिटर के भी चारों ओर इलेक्ट्रानों और प्रोटानों की विकिरण पट्टियां हैं। लेकिन यह पृथ्वी की अपेक्षा दस लाख गुना अधिक शक्तिशाली है। जूपिटर के चारों तरफ चार चमकीले वलय हैं। पहला वलय लगभग 600 किमी दूरी पर है। इस वलय का बाहरी हिस्सा बहुत ही चमकीला है। इसकी लंबाई लगभग 800 किमी है। इसके वलयों का घनत्व शनि के वलयों के मुकाबले लगभग 100 गुना कम है। चमकीली और गाढ़ी दिखने वाली विषुवत रेखा के समान्तर फैली हुई पट्टियां वास्तव में ऊपर उठती और नीचे जाती हुई वायुमंडल की तहें हैं। नेपच्यून ग्रही के वलयों के बारे में हमारी जानकारी अभी न के बराबर ही है। 4,15,000 किमी व्यास वाले इस ग्रह का वजन हमारी 17 पृथ्वियों के बराबर है। इसका घनत्व जूपिटर, शनि और यूरनेस से कुछ अधिक है। अब वैज्ञानिकों द्वारा उम्मीद की जा रही है भविष्य में वे ग्रहीय वलय के रहस्यों को सुलझा लेंगे।

–राजेन्द्र कुमार राय

निखिल धाम मंदिर का निर्माण केवल दस महाविद्याओं की साधना के लिए ही नहीं किया गया है, बल्कि यह जीवन में प्रकाश, प्रकाश के उत्सर्जन, उसके स्थान्तरण, मौजूदगी, एहसास, प्रकाशमय बनने और उसके जरिये प्रकाशित होने की क्रिया सिखाने का अध्यात्मिक परम कर्म का निर्माण भी है। निखिल धाम भोपाल के नजदीक भोजपुर में स्थिति है और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दूसरे सभी शहरों से भोपाल होते हुए हवाई, रेल और सड़क मार्ग से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

महाविद्याओं का एक अनोखा मंदिर है निखिल धाम

आप चाहें गुजरात और दिल्ली के अक्षरधाम मंदिर के आकर्षण को ना भूल पा रहे हों, पर भोपाल से करीब तीस किलोमीटर की दूरी पर भोजपुर के निकट पांच एकड़ में बना निखिल धाम मंदिर अब न केवल अध्यात्म दृष्टि से बल्कि इस मंदिर में दस महाविद्याओं की स्थापना के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है। महाविद्याओं की ये सभी मूर्तियां राजस्थान के सिद्धस्त कलाकारों द्वारा बनायी गयी है। यही नहीं निखिल धाम मंदिर के आस-पास और उसके प्रांगण में शुद्ध तंत्र साधना के लिए अद्वितीय दुर्लभ और लुप्तप्राय पेड़ और जड़ी बूटियों के साथ कई ऐसे वृक्ष भी लगाए जा रहे हैं, जो अब देश के ही कुछ ही हिस्सों में पाए जाते हैं।

इस मंदिर की योजना और अवधारणा महाविद्या साधक परिवार के गुरुदेव श्रीसुदर्शन स्वामी और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह के नेतृत्व में सन् 1999 में बनाई गई थी। महाविद्या साधक परिवार सद्गुरुनाथ परमहंस स्वामी श्री निखिलेश्वरानंद महाराज के सिद्धांतों पर आधारित है और इस परिवार के साधक दसों महाविद्याओं के साधना में जुड़े हुए हैं। इस मंदिर में स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी की चैतन्य मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा तीन साल पहले की गयी थी। धार्मिक दृष्टि से देखा जाये तो निखिल धाम एक अद्वितीय स्थान है, क्योंकि यहां सरबेश्वर समेत अन्य देवताओं की स्थापना भी एक ही जगह की गयी है और दो साल पहले शिवरात्रि के शुभ अवसर पर इन दसों महाविद्यालयों की शिला स्थापना की गयी थी, जिसके कारण निखिल धाम अब ऐसी जगह भी बन गयी है, जहां हर समय एक शुद्ध आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाह होती रहती है।

लेकिन निखिल धाम मंदिर सिर्फ दस महाविद्याओं की स्थापना के लिए ही प्रसिद्ध नहीं होने जा रहा है, बल्कि विगत ग्यारह वर्षों से यहां मासिक पत्रिका साधना सिद्धि विज्ञान का प्रकाशन भी नियमित किया जा रहा हैं। यह पत्रिका पूरी तरह से आदि शंकराचार्य और सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंदजी की शिक्षाओं को समर्पित की गयी है। गौरतलब है कि स्वामी निखिलेश्वरानान्दजी ने 1998 में अपने शरीर का त्याग कर दिया था और तब से लेकर आज तक गुरुदेव सुदर्शन और गुरुमाता डॉ. साधना सिंह उनके पदचिह्नों और शिक्षाओं पर चलकर शुद्ध आध्यात्मिक पथ के तहत महाविद्या साधनाओं और अन्य साधनाओं की दीक्षा के काम में लगे हैं, ताकि अधिक से अधिक लोग उनकी शिक्षाओं और दीक्षाओं से लाभान्वित हो सके, गुरुदेव सुदर्शन स्वामी कहते हैं, दरअसल ये दसों महाविद्याएं अलग होते हुए भी एक दूसरे से जुडी हुई हैं और हमारे देश में महाविद्याओं के साधक गिने चुने रह गए हैं। ऐसे में ये मंदिर इन विद्याओं के विकास और विस्तार में लाभकारी सिद्ध होगा।' उनका कहना है कि शक्तिवाद महाविद्याओं की साधना पर ही आश्रित एक खंड है। यह विश्व शक्तिमय है और शक्ति के बिना शिव भी अधूरे हैं। सुदर्शन स्वामी का मानना है कि एक से बहुवचन वाला सिद्धांत ही शक्तिवाद का मूलमंत्र हैं। केवल यही एक ऐसा तत्व है, जो बहुलता, विभिन्नता और शिव के सानिध्य में प्रतिक्षण कुछ नया निर्माण करता है। वे कहते हैं, 'गौर से देखा जाए तो नवीनता ही शक्ति का प्रतीक है और शक्ति उपासना के अभाव में यह विश्व पुरातन पड़ जाएगा। अगर हमने इस पर ध्यान नहीं दिया तो एक दिन यह विश्व वृद्ध एवं जर्जर होकर धराशाही हो जायेगा।'

निखिल धाम मंदिर का निर्माण केवल दस महाविद्याओं की साधना के लिए ही नहीं किया गया है, बल्कि यह जीवन में प्रकाश, प्रकाश के उत्सर्जन, उसके स्थान्तरण, मौजूदगी, एहसास, प्रकाशमय बनने और उसके जरिये प्रकाशित होने की क्रिया सिखाने का अध्यात्मिक परम कर्म का निर्माण भी है। स्वामी सुदर्शन कहते हैं, जैसे जीवन आंख खोलते ही प्रकाश के लिए कुलबुलाता है। उसे प्रकाश की भिन्न-भिन्न आवृत्तियां चाहिए और वह प्रकाश के मूल बिंदु तक पहुंचना चाहता है, ठीक उसी तरह भौतिक सुविधाओं में उलझे राजनेता, बुद्धिजीवी और तकनीकिकारों को भी पृथ्वी को प्रकाशवान बनाने के लिए काम करना चाहिए। उनका मानना है कि आज वही देश विश्व में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जो प्रकाश के महत्त्व की प्रचुरता को पहचानता है, ताकि प्रकाश की गोपनीय उलझी हुई आवृत्तियां को पहचान कर अनंतकाल तक स्वप्रकाशित जीवन को बनाया रखा जा सके।

निखिल धाम भोपाल के नजदीक भोजपुर में स्थिति है और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दूसरे सभी शहरों से भोपाल होते हुए हवाई, रेल और सड़क मार्ग से यहां आसानी से पहुंचा जा सकता है।

–रामकिशोर पारचा

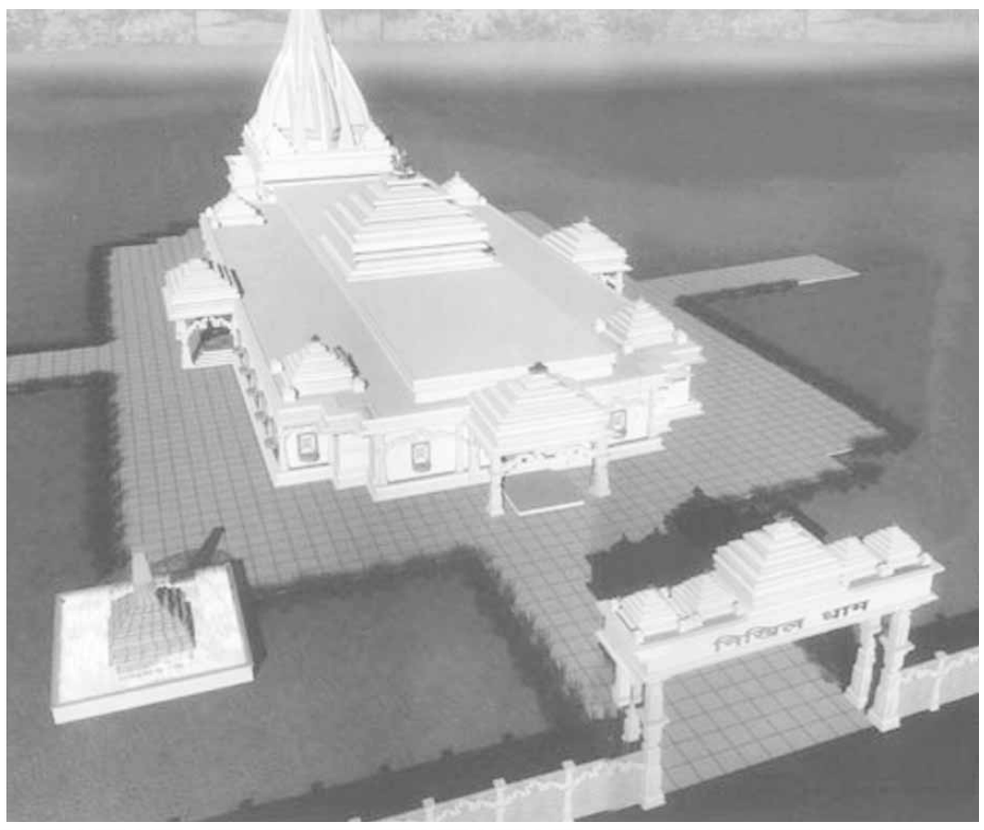

स्विस बैंक अकाउंट - यह क्या बला है ?

बचपन में आपने परियों की कहानियां सुनी होगी। आप परियों के विश्व में खो गए होंगे। आज थोड़ा बड़े होते हैं। आप भूत, प्रेत, आत्माओं की कहानियां सुनते हैं। आप डरते भी हैं, पर भी सुनना चाहते हैं। आप थोड़ा और बड़े होते हैं, तो वीर पुरुषों की गाथाएं आपको प्रभावित करती है। बुढ़ापे में स्वर्ग का द्वार बतलाने के लिए बाबा लोगों की फौज खड़ी हुई है। आपके गतकालीन वैभव स्मरण दिलाते हैं। भारत एक सोने की चिड़िया थी। भारत के पास अपार संपत्ति थी। कुछ चालाक भारतीयों ने, भारत सबसे बड़ा धनाढ्य देश साबित करने की ठान ली। बड़े सुझ बूझ से काम किया । स्विस बैंक में छिपे काले धन का चिट्ठा खोल दिया। स्विस बैंकों का काला धन भारतीयों के नाम पर था। आपने स्विस बैंकर्स एसोसिएशन के रिपोर्ट का हवाला दिया। ब्योरा इस प्रकार का है।

	2006	2008
भारत	1456 बिलियन डॉलर्स	1991 बिलियन डॉलर्स
रशिया	390 बिलियन डॉलर्स	610 बिलियन डॉलर्स
इग्लैंड	390 बिलियन डॉलर्स	210 बिलियन डॉलर्स
युक्रेन	100 बिलियन डॉलर्स	140 बिलियन डॉलर्स
चीन	96 बिलियन डॉलर्स	213 बिलियन डॉलर्स
बाकी के पूरे देश मिलकर		300 बिलियन डॉलर्स

दुनिया के सभी देशों की संपत्ति मिलाकर भी भारत के संपत्ति के बराबर नहीं हो पा रही है। इन आंकड़ों पर भरोसा करने वालों की कमी नहीं है। मिडीयाने इसे नयी खोज समझकर छापा। सभी ने इसका अनुसरण किया। अब टी.वी. वाले पीछे नहीं रह सकते थे। इस कहानी की अली बाबा और चोर के कहानी का स्वरूप प्राप्त हुआ, इसमें मंत्रियों का कितना पैसा लगा है, इस पर चर्चा होने लगी। अटकलेबाजी शुरू हुई। अब जिह्वा पर बंधन न रहा।

भारत में स्कैंडल्स तो होते ही रहते हैं। यह सिलसिला थमते नजर नहीं आता। हर स्कैंडल में पैसों की हेराफेरी होती है। जनता के मन में यह प्रश्न आता है, यह पैसा जाता है कहां ? अब सीधा उत्तर मिल गया यह पैसा स्विस बैंक में जाता है। अब घोटालों का ब्योरा सामने आने लगा।

1. बोफोर्स
2. तेल के बदले अनाज
3. संचार घोटाला
4. लालू का चारा घोटाला
5. मेडिकल कॉलेज का घोटाला
6. खनिज संपत्ति का घोटाला
7. डिफेन्स खरीदी दलाली
8. कफन खरीदी का घोटाला
9. ताज कॉरिडार का मामला
10. लॉटरी का मामला
11. पानी, बिजली सड़क तो है ही
12. जवाहर रोजगार योजना
13. तेलगी का स्टॉप घोटाला
14. सत्यम घोटाला
15. बुलेटप्रूफ जॉकेट का घोटाला

यह तो चंद इने गिने नाम है। षलस्ट बनाई जाये तो वह टेलीफोन डिरेक्टरी से बड़ी हो जाएगी। इन घोटालों के साथ व्यक्ति के नाम भी जुड़े हैं। इन व्यक्तियों के नाम स्विस बैंक में पैसा है, ऐसा खुलेआम समझा जाने लगा। सभी राजकीय दल इस दलदल में फंसे। अब यह मामला संसद के सामने आना ही था। शरद यादव और आडवाणी जी ने यह सवाल संसद में उठाया। हमारे संसद सदस्य छानबीन करके बोलना चाहिए, यह तो भूल ही गए है। यह आंकड़ें कहां से प्राप्त हुए यह किसी ने जानने की कोशिश नहीं की। सभी यह मानकर चल रहे थे कि भारतीयों का इतना पैसा जमा पड़ा है।

हमने कभी यह नहीं सोचा की एक चोर एक महान में चोरी करने गया। घर में एक किलो सोना था, पुलिस वालों ने चोर को पकड़ा और कहा, उसके पास दस किलो सोना है। यह कैसे संभव है ? डिफेन्स कॉन्ट्रक्ट हजार करोड़ का है, उसमें सौ या दो सौ करोड़ खाया जा सकता है, दो हजार करोड़ नहीं। क्या हमारे भारतीय उद्योगपति इतने नासमझ हैं कि वह अपना पैसा बैंक में पड़े देखते रहेगा। भारत में पूंजी की बहुत बड़ी कमी है। लागत पर पैसा कमाना हमें अच्छा आता है।

हमारा सबसे ज्यादा पैसा रियल इस्टेट में लगा रहता है। हमारा दूसरा निवेश स्थल सोना है। दुनिया में सबसे बड़ा ग्राहक भारत है। भारत में हर जगह पैसा देना पड़ता।

1. इलाज का खर्चा
2. स्कूल और कॉलेज का डोनेशन
3. मकान खरीदी
4. रोजमर्रा का खर्चा
5. शादी ब्याह का खर्चा और दहेज
6. पर्यटन ।

जो सामान्य धनी होते हैं, उनका कालाधन इसमें ही लग जाता है। आजकल धनी लोगों में विदेश जाने की होड़ लगी है। नए कार के मॉडल आने लगे हैं। अब बात अटकती है असामान्य धनी लोगों के पास। इनकी तादाद बहुत कम है। इनका पैसा स्विस बैंक में गया तो भी वह पैसा वही पर टिकता नहीं, क्योंकि भारत में निवेश करके ज्यादा पैसा कमाया जा सकता है। पैसा वापस लाने के अनेक मार्ग उपलब्ध है। जहां टैक्स नहीं उन देशों में निवेश किया जाता है और अनाब शनाब मुनाफा बताकर उसे भारत लाया जाता है। सबसे आसान तरीका शेल कंपनियों की टैक्स हेवन में स्थापना। टैक्स हेवन उन्हें कहते हैं, जो निवेशिकों की जानकारी नहीं पूछते। सारा कारोबार कंपनी के नाम पर होता है। इनका भारत सरकार से दोहरे टैक्स के बारे में समझौता होता है। निम्न देश टैक्स हेवन्स है।

1. मारिशस
2. अँक्वीला
3. बहामा
4. बेलीज
5. पनामा
6. ब्रिटिश वर्जीन आयलैंडस्

जहां टैक्स कम है, ऐसे देश है

1. दुबई
2. सिंगापुर
3. हांगकांग
4. बेहरीन

अफवाह की उम्र कम होती है, पर स्विस बैंक अकाउंट ने जनमानस में स्थान प्राप्त किया हुआ है। नेता लोग निराधार को आधार बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। कोई राजनीति में अपना स्थान निर्माण करना चाह रहे हैं। लोगों का अच्छा टाइम पास हो रहा है, जिनका सचमुच वास्तव में अकाउंट है, वह जनता के नादानी पर हंस रहे हैं। अफवाहों को नोबेल पुरस्कार देने का तय हुआ तो सर्वप्रथम पुरस्कार 'भारतीय स्विस बैंक अकाउंट होल्डर को दिया जाना चाहिए और वह राशि इतनी बड़ी होगी की उसे स्विस बैंक अकाउंट की जरूरत पड़ेगी।

भारतीय उद्योगपति अपना कालाधन इन शेल कंपनियों में निवेश करते हैं और यह कंपनियां फिर से भारत में निवेश करती है। भारत के अंतर्राष्ट्रीय निवेश का 45% हिस्सा अकेले मारिशस से आता है। यह भारतीयों का ही पैसा होता है। अब स्विस बैंक में इतने मात्रा में रखने के लिए पैसा आता ही कहां से ? आप कहेंगे नेताओं का पैसा जमा होता होगा। पर राजनेताओं ने उद्योगपतियों को पाल रखा है।

सवाल उठता है, स्विस बैंक में कौन पैसा रखता है ?

1. जहां अस्थिर सरकारें होती है
2. हवाला पैसा
3. मनी लॉड्रिंग ड्रग ट्रैफकिंग
4. दलाली का पैसा
5. हुकूम शाहों का पैसा
6. टैक्स चोरी का पैसा
7. दिवालीयों का पैसा
8. रिश्वत देने के लिए, कंपनियों ने जमा किया पैसा
9. इस्टेट ड्यूटी और स्वास्थ्य टैक्स से बचने के लिए जमा किया पैसा
10. कानून से बचने के लिए जमा किया पैसा ।

इसके अलावा और भी कई कारण हो सकते हैं। अब सवाल सामने आता है, भारतीय याने कौन से भारतीय ? भारत में बसने वाले भारतीय या दुनिया भर से फैले हुए भारतीय जिन्हें हम एनआरआई कहते हैं। एनआरआई का पैसा भारतीय कैसे कहा जा सकता है ? आज भारत से ज्यादा धनी अनिवासी भारतीय है। जिन लोगों ने यह अफवाये फैलाई, उन्होंने सुझ-बूझ से काम नहीं लिया है, नहीं तो अनिवासी भारतीयों जिक्र अवश्य करते।

अफवाओं को कान होते हैं, पैर नहीं होते। सचाई के सामने लड़खड़ाने लगते हैं। पर गोबेल्स ने कहा था की एक झूठ आप दस बार दोहराये तो वह सत्य प्रतीत होने लगता है। यदि दोहराने वाला व्यक्ति प्रतिष्ठित और प्रभावशाली वक्ता हो, तो झूठ को सचाई का जामा पहनाना आसान हो जाता है। इन अफवाह फैलाने वालों के हाथ में एक प्रभावशाली व्यक्ति हाथ लग गयी, उनका नाम है बाबा रामदेव।

विश्व भर में योग सामर्थ्य का प्रसार करने का कार्य आपने सुयोजित ढंग से किया है। आपने स्वस्थ भारत का सपना दिखाया है और उसे वास्तव में लाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं। प्रसार माध्यमों ने आपको शिखर पर चढ़ाया। जब वह शिखर पर विराजमान हुए तब वह पूरे भारत को बदलने का सपना देखना शुरू किया और यह सपना साकार करने का अनोखा साधन ढूंढ़ निकला वह स्विस बैंक का कालाधन।

बाबा रामदेव जी ने दो घोष वाक्य बनाए-

1. योगा करो स्वस्थ बन जाओ और
2. स्विस बैंक का कालाधन लाओ और भारत को समृद्ध बनाओ।

तरीका बड़ा आसान था। टैक्स नहीं, मेहनत नहीं और खुशहाली पाओ। स्विस बैंक के किस्से सुनाने जाने लगे। सभी राजनेता मुजरिम बन गए। उद्योगपतियों के कारनामों का डंका बजने लगा। सभी की आंखें धनी लोगों की तलाशी लेने लग गयी। किसी को बदनाम करना है, तो बेझिझक कहिए इसका स्विस बैंक अकाउंट है। पूरे अवांछित गतिविधियां अपने आप आपके खाते में जमा होगी।

म. गांधीजी ने कहा था- 'ध्येय संकल्प पूरा करने के लिए साधन सुचिता जरूरी होती है ।' बाबा रामदेव जी समृद्ध भारत की नींव भ्रम पर आधारित मिथ्या तथ्यों पर आधारित कर रहे हैं। अनपढ़, अंधश्रद्धालु जनता को भ्रमित कर रहे हैं। भारत को जगाने से पहले स्वयं जागकर तथ्यों की ओर देखिए-जिन रिपोर्टों का हवाला दिया जाता है, वह है-

1. स्विस बैंक एसोशिएसन रिपोर्ट 2006
2. स्विस बैंक एसोशिएसन रिपोर्ट 2008

यह रिपोर्ट 53 और 55 पन्नों का है। यह एक अध्ययन रिपोर्ट और इसमें किसी देश के आंकड़े नहीं दिए गये हैं। इनमें से एक रिपोर्ट में भारत के नाम का उल्लेख पांच बार आया है और दूसरे में आठ बार। बाबा रामदेव जी पर मेरी श्रद्धा है और इसी अनुकंपा से मैं कहता हूं की आप राजनैतिक दल-दल से दूर रहे। दल-दल में फंस गए तो निकलना मुश्किल हो जाएगा। म. गांधीजी के अनुयायी का पतन हमने देखा है। साथी जयप्रकाशजी से प्रेरणा लेकर आपातकाल के कार्यकाल में आए अनुयायियों का पतन हम देख रहे हैं।

अफवाह की उम्र कम होती है, पर स्विस बैंक अकाउंट ने जनमानस में स्थान प्राप्त किया हुआ है। नेता लोग निराधार को आधार बनाने की चेष्टा कर रहे हैं। कोई राजनीति में अपना स्थान निर्माण करना चाह रहे हैं। लोगों का अच्छा टाइम पास हो रहा है, जिनका सचमुच वास्तव में अकाउंट है, वह जनता के नादानी पर हंस रहे हैं।

अफवाहों को नोबेल पुरस्कार देने का तय हुआ तो सर्वप्रथम पुरस्कार 'भारतीय स्विस बैंक अकाउंट होल्डर को दिया जाना चाहिए और वह राशि इतनी बड़ी होगी की उसे स्विस बैंक अकाउंट की जरूरत पड़ेगी।

– श्रीनिवास सावरीकर